अयुक्तः=शास्त्र-विरुद्ध कर्म करने वाला; **प्राकृतः**=विषयी; **स्तब्धः**=हठी; **शठः**=कपटी; **नैष्कृतिकः**=दूसरों का अपमान करने में कुशल; **अलसः**=शिथिल (आलसी); **विषादी**=शोकाकुल; **दीर्घसूत्री**=कार्य करने में अति मंद; **च**=तथा; **कर्ता**=कर्म करने वाला; **तामसः**=तामस; **उच्यते**=कहा जाता है।

अनुवाद

जो नित्य शास्त्र-विरुद्ध कर्म में प्रवृत्त है, विषयी, हठी, कपटी, और दूसरों का अपमान करने वाला, विषादी, आलसी तथा दीर्घसूत्री है, वह कर्ता तामस कहा जाता है।।२८।।

तात्पर्य

शास्त्रों में कुछ प्रकार के कर्मों का विधान है और कुछ का निषेध है। जो इस शास्त्रविधि को नहीं मानते उनसे निषिद्ध कर्म बनता है। ऐसे मनुष्य प्रायः घोर विषयी होते हैं। शास्त्रविधि के स्थान पर वे प्रकृति के गुणों के अनुसार कर्म करते हैं। ऐसे कर्म करने वाले नम्रता से रहित, कपटी और दूसरों को अपमानित करने में दक्ष होते हैं। उनमें आलस्य प्रबल रहता है—वे अपना कर्तव्य-पालन भी भलीभाँति नहीं कर पाते; वरन् उसे निरन्तर आगे के लिए टालते रहते हैं। यही कारण है कि वे सदा शोकमग्न दिखते हैं। वे स्वभाव से ही दीर्घसूत्री होते हैं— एक दिन के कार्य में वर्षों लगा देते हैं। इस कोटि के कर्ता तामसी हैं।

बुद्धेर्भेदं धृतश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय।।२९।।

बुद्धेः=बुद्धि के; **भेदम्**=भेद; **धृतेः**=धृति के; **च**=भी; **एव**=निःसन्देह; **गुणतः**=गुणों के अनुसार; **त्रिविधम्**=तीन प्रकार के; **शृणु**=सुन; **प्रोच्यमानम्**=मेरे द्वारा कहे; **अशेषेण**=पूर्ण रूप से; **पृथक्त्वेन**=विभागसहित; **धनञ्जय**=हे अर्जुन।

अनुवाद

अब हे अर्जुन! तीनों गुणों के अनुसार बुद्धि और धृति के भेदों को भी पूर्ण रूप से विभागसहित सुन।।२९।।

तात्पर्य

प्रकृति के गुणों के अनुसार ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता के तीन-तीन भेदों का विवेचन करके भगवान् श्रीकृष्ण अब उसी प्रकार बुद्धि और धृति (धारणा-शक्ति) के भेदों का निरूपण करते हैं।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी।।३०।।

प्रवृत्तिम्=धर्म में प्रवृत्ति को; **च**=तथा; **निवृत्तिम**=अधर्म से निवृत्ति को; **च**=भी; **कार्य-अकार्य**=कार्य (निष्काम कर्म) तथा अकार्य (सकाम कर्म) को; **भय-अभये**=शास्त्रविधि से होने वाले अभय को और अशास्त्रीय प्रवृत्ति से होने वाले